ताकी कथनी वारता, जिन आगम अनुसार।
कहता हूं कुछ वचनसों, सुनहु भविकजन सार ॥ ४ ॥

इस मध्यलोकमें एक लाख योजनका जम्बूद्वीप है. उसके मध्यमें एक सुदर्शन मेरु है, जिसकी दक्षिण दिशामें एक भरतनामका क्षेत्र है. भरतक्षेत्रमें छह खंड हैं, जिसमें यह आर्यखंड बहुत प्रसिद्ध है. जिसमें मगधदेशकी राजगृही नगरीमें एक श्रेणिक नामका राजा अपनी रानी चेलनासहित राज्य करता था।

राजगृही नगरीके समीप विपुलाचल, उदयगिरि, सोनागिरि, रतनागिरि और विहारगिरि नामके पांच पर्वत हैं. उनमें विपुलाचल पर्वतपर श्री १००८ महावीर भगवानका समवसरण आया. वनमालीने राजाके समीप जाकर निवेदन किया कि, महाराज! विपुलाचलपर त्रिलोकीनाथ वर्द्धमान भगवानका समवसरण आया है. सुनकर राजा इतना प्रसन्न हुआ

कि उसने अपने शरीरपरके सारे आभूषण उतारकर मालीको दे दिये,और सिंहासनसे उतरकर सात पैंड (कदम) परवतकी तरफ चलकर साष्टांग नमस्कार किया. तत्काल ही शहरमें घोषणा करा दी कि, महावीरभगवानका समवसरण आया है, इसलिये सब लोग दर्शन पूजनके अर्थ चलो. और आप भी हाथीपर आरूढ होकर वन्दनाके लिये चला. दूरहीसे समवसरण देखकर हाथीसे उतर पड़ा और फिर समीप जाकर उसने भावपूर्वक वन्दना की. मनुष्यमंडलीमें बैठकर भगवान्‌की दिव्यध्वनि द्वारा धर्मामृतका पान किया. तत्पश्चात् अवसर पाकर हाथ जोड़ खड़ा होकर पूछा, भगवन् ! श्रीऋषभदेव, अजितनाथ आदि तीर्थंकर किस क्षेत्रसे मोक्षको प्राप्त हुए हैं और आपका निर्वाण कहांसे होगा ? इसके सिवाय पूर्वकालमें जो अनंतानंत चौवीसी मोक्षगई हैं, सो किन २ क्षेत्रोंसे गई हैं, भविष्यमें अनंतानंत तीर्थंकर मोक्ष जावेंगे, सो किस क्षेत्रसे जावेंगे ? सो

उन तीर्थंकरोंके मध्यवर्ती समयमें कौन २ मुक्ति गये हैं, चौवीस तीर्थंकर जिस क्षेत्रसे मोक्ष जाते हैं, उस क्षेत्रके दर्शनसे क्या फल होता है ? और आगें ऐसी यात्रा किस २ ने की है; तथा उन्हें क्या २ फल मिले हैं, इन सब प्रश्नोंके उत्तर आप कृपाकरके विस्तारपूर्वक कहिये ?

यह सुनकर भगवान्‌की दिव्यध्वनि हुई कि, राजा श्रेणिक ! तुमने बहुत अच्छे प्रश्न किये. अब तुम उनका उत्तर चित्तको समाधान करके सुनो।

पूर्वकालमें अनंतानंत चौवीस तीर्थंकर श्रीसम्मेदशिखरपर्वतपरसे मोक्षको प्राप्त हुए हैं और आगे (भविष्यमें) भी जो अनंतानंत चौवीस तीर्थंकर होंगे, वे श्रीसम्मेदशिखरसेही मोक्ष जावेंगे. इसीप्रकार चोवीसों तीर्थंकरोंका जन्म भी श्रीअयोध्यानगरीमें होता है. और होवेगा परन्तु वर्तमानकालमें केवल २०ही तीर्थंकर इस सम्मेदशिखरसे मोक्ष गये हैं. क्योंकि श्रीऋषभदेव कैलास पर्वतसे, वासुपूज्य चंपापुरसे, तथा नेमिनाथ गिरनारसे मोक्ष जा चुके हैं,

और हम पावापुरीसे मोक्ष जावेंगे. शेष वीस तीर्थंकर सम्मेदशिखरजीसे निर्वाण प्राप्त हुए हैं. इसीप्रकारसे वर्तमानकालमें अयोध्यानगरीमें केवल ५ तीर्थंकरोंका जन्म हुआ है. शेष १९ का अन्यान्य नगरियोंमें हुआ है ।

यह सुनकर राजा श्रेणिकने पूछा, भगवन् ! ऐसा होनेका क्या कारण है. एक ही स्थानमें जन्म और एक ही स्थानमें मोक्ष होनेका जो नियम है, उसका भंग क्यों हुआ ?

भगवान्ने उत्तर दिया, कि—राजन् ! यह एक कालका दोष है. अनंतानंत कोड़ाकोड़ी उत्सर्पिणीकाल व्यतीत होनेपर कोई एक ऐसा ही काल आ जाता है, जिसमें इस नियमका उल्लंघन हो जाता है. अर्थात् उसके प्रभावसे अनेक तीर्थंकरोंका जन्म और निर्वाण अन्य २ स्थानोंसे हो जाता है. ऐसे कालको हुंडावसर्पिणी कहते हैं. इस विषयमें तुम कुछ सन्देह मत करो. यथार्थमें चौवीसों तीर्थंकरोंकी जन्मभूमि अयोध्या है और निर्वाणभूमि श्रीसम्मेदशिखर जी ही है ।

राजाश्रेणिक—भगवन् ! आपने जिसप्रकार कहा, वही सत्यार्थ है. अब कृपाकरके यह बतलाइये कि, श्रीऋषभदेवसे लगाकर आप तकके निर्वाणक्षेत्रोंकी वंदनाका फल क्या है,और शिखरजीकी यात्रा करके आगे किस २ को क्या २ फल मिले, तथा आगे क्या २ मिलेंगे।

वीरभगवान्—हे राजन् ! कैलास पर्वतसे दश हजार मुनि मोक्षको प्राप्त हुए हैं. और श्रीसम्मेदशिखरजीपर वीस टोंकें हैं. उनमेंसे **सिद्धवरकूटसे** श्रीअजितनाथ तीर्थंकर एकअरब अस्सीकरोड़ चौवनलाख एक हजार मुनियोंसहित मोक्ष गये हैं. इस टोंककी बन्दनाका फल बत्तीस करोड़ उपवासके बराबर है. दूसरे **धवलदत्त कूटसे** संभवनाथ तीर्थंकर नौ कोड़ाकोड़ी बहत्तरलाख ब्यालीस हजार पांचसौ मुनियोंकेसहित मोक्ष पधारे हैं. इसकूटके दर्शन करनेका फल ब्यालीस लाख उपवास करनेके बराबर है. तीसरे **आनन्दकूटसे** श्रीअभिनन्दन तीर्थंकर तीस कोड़ाकोड़ी

सत्तर करोड़ सत्तर लाख बियालीस हजार सात सौ मुनियोंकेसहित निर्वाण प्राप्त हुए हैं. इस कूटके दर्शन करनेका फल एक लाख उपवासके फलके तुल्य है। चौथे **अविचलकूटसे** सुमतिनाथ तीर्थंकर एक कोड़ाकोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तरलाख इक्यासी हजार सात सौ मुनियोंसहित मोक्ष पधारे हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल एक करोड़ उपवास करनेके समान है। पांचवें **मोहनकूटसे** पद्मप्रभ तीर्थंकर निन्यानवै कोड़ाकोड़ी सत्तानवै करोड़ सत्तासी लाख बियालीस हजार सातसौ मुनि सहित मोक्ष प्राप्त हुए हैं। इस कूटके दर्शनका फल एक करोड़ उपवास करनेके तुल्य है। छठे **प्रभासकूटसे** सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर चौरासी कोड़ाकोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनिसहित मुक्ति गये हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल बत्तीस कोड़ाकोड़ी उपवासके बराबर है। सातवें **ललितकूटसे** चन्द्रप्रभ तीर्थंकर हजार

मुनिसहित मोक्ष प्राप्त हुए हैं। इनके सिवाय वहांसे चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सीलाख चौरासी हजार पांच सौ पचपन मुनि और भी मुक्ति गये हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल सोलहलाख उपवासके तुल्य है। आठवें सुप्रभकूटसे श्रीपुष्पदन्त तीर्थंकर हजार मुनिसाहित मुक्ति पधारे हैं तथा निन्यानवें करोड़ नव्वैलाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि और भी वहांसे मुक्ति गये हैं। इस कूटके दर्शन करनेका फल एक करोड़ उपवासके बराबर है। नवमें विद्युतवर कूटसे शीतलनाथ तीर्थंकर एक हजार मुनिसहित मोक्ष गये। औरभी वहांसे अठारह कोड़ाकोड़ी बियालीस करोड़ बत्तीस लाख बियालीस हजार नौसे पांच मुनियोंने मुक्ति पाई है। इस कूटके दर्शनका फल भी एक करोड़ उपवास करनेके बराबर है। दशवें संकुलकूटसे श्रेयांसनाथ तीर्थंकर एक हजार मुनिसाहित मोक्ष गये हैं और तथा छयानवे कोड़ाकोड़ी छयानवें करोड़ छयानवें लाख नवहजार

पांच सौ बियालीस मुनियोंने और भी वहासे मुक्ति पाई है। इसकूटके दर्शन करनेका फल भी एक करोड़ उपवास करनेके बराबर है।

चंपापुरसे वासुपूज्यतीर्थंकर हजार मुनिसहित मोक्ष पधारे हैं। सम्मेदशिखरके ग्यारहवें **वरिसंवल** कूटसे विमलनाथतीर्थंकर हजार मुनिसहित मोक्ष गये हैं। और छह हजार छहसौ तथा सत्तर कोड़ाकोड़ी साठ लाख छह हजार सात सौ बियालीस मुनि औरभी मुक्ति गये हैं। इसकूटके दर्शनका फल एक करोड़ उपवास करनेके बराबर है। बारहवें **स्वयंभू** कूटसे अनंतनाथ तीर्थंकर हजार मुनिसहित मोक्ष गये हैं। इनके शिवाय पचहत्तर सौ, सातसौ तथा छयानवे कोड़ाकोड़ी सत्तर लाख सत्तरहजार सात सौ मुनि औरभी मोक्ष गये हैं। इस कूटके दर्शनका फल एक करोड़ उपवास करनेके तुल्य है। तेरहवें **सुदत्तवर** कूटसे धर्मनाथ तीर्थंकर आठसौ एक मुनिसहित मोक्ष प्राप्त हुए हैं। तथा इसी कूटसे

उन्नीस कोड़ाकोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवै मुनि और भी मुक्त हुए हैं. दर्शन करनेका फल एक करोड़ उपवास करनेके बराबर है. चौदहवें **शान्तिप्रभ** कूटसे श्रीशांतिनाथ तीर्थंकर नौ सौ मुनिसहित मुक्तिधामको गये हैं, तथा इसी कूटसे नौ सौ कोड़ाकोड़ी छ्यानवै करोड़ बत्तीस लाख छ्यानवै हजार सात सौ बियालीस मुनियोंने और भी पंचमगति पाई है। इसके दर्शन करनेका फल एक करोड़ उपवास करनेके बराबर है। पन्द्रहवें **ज्ञानधर** कूटसे कुंथुनाथ तीर्थंकर हजार मुनिसहित मोक्ष पधारे हैं। तथा छ्यानवै कोड़ाकोड़ी छ्यानवै करोड़ बत्तीसलाख छ्यानवै हजार सात सौ ब्यालीस मुनि और भी मोक्षधामको गये हैं। दर्शनकरनेका फल एक करोड़ उपवास करनेके बराबर है। सोल-हवें **नाटककूटसे** अरनाथ तीर्थंकर हजार मुनिसहित मोक्ष गये हैं. तथा निन्यानवै करोड़ निन्यानवै लाख निन्यानवै हजार मुनियोंने और भी मुक्ति-

लक्ष्मी प्राप्त की है। इस कूटके दर्शनकरनेका फल छ्यानवै करोड़ उपवास करनेके बराबर है। सत्रहवें **संवलकूट**से श्रीमाल्लिनाथ तीर्थंकर पांच सौ मुनियोंके सहित मुक्ति गये हैं। तथा छ्यानवैं करोड़ मुनि औरभी वहांसे परमपदको प्राप्त हुए हैं। इसका दर्शन करना एक करोड़ उपवास करनेके बराबर है. अठारहवें **निर्जरा** कूटसे मुनिसुव्रनाथ तीर्थंकर हजार मुनिसहित मुक्त हुए हैं. तथा निन्यानवै कोड़ाकोड़ी, सत्तानवै करोड़ नौ लाख नौ सौ निन्यानवै मुनि औरभी वहांसे मुक्त धामको गये हैं। इस टोंकके दर्शनका फल एक करोड़ उपवास करनेके समान है। उन्नीसवें **मित्रधर** कूटसे नमिनाथ तीर्थंकर हजार मुनिसहित निर्वाण प्राप्त हुए हैं. तथा नौ सौ कोड़ाकोड़ी पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बियालीस मुनि औरभी कर्मोंसे छूटे हैं। इस टोंकके दर्शनका फल एक करोड़ उपवास करनेके बराबर है।

गिरनार पर्वतसे श्रीनेमिनाथ तीर्थंकर पांच सौ छत्तीस मुनिसहित मोक्ष प्राप्त हुए हैं. तथा बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि औरभी गिरनार पर्वतसे मुक्त हुए हैं।

सम्मेदशिखरके वीसवें सुवर्ण भद्रकूटसे श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकर पांच सौ छत्तीस मुनिसहित परमधामको सिधारे हैं. तथा चौरासी लाख मुनि औरभी वहांसे मुक्त हुए हैं। इस कूटके दर्शनकरनेका फल एक करोड़ उपवास करनेके फलके बराबर है।

इसके पश्चात् श्रीगौतमगणधर बोले, हे राजन्! ये महावीर भगवान् पावापुरीके पद्मसरोवरमेंसे छत्तीस मुनियोंकेसहित मोक्ष जावेंगे. तथा शिखरजीकी जिन्होंने पूर्वकालमें यात्रा की है, उनमेंसे थोड़ेसे नाम मैं कहता हूं। सगर, सागर, मघवा, सनत्कुमार, आनन्द, प्रभसेन; ललितदंत, कुंदसेन, सेनादत्त, वरदत्त, सोमप्रभ, चारुसेन; आदि इनके सिवाय

और भी हजारों राजाओंने यात्रा की है, परन्तु उनमेंसे दर्शन केवल उन्हींको हुए हैं, जो भव्य थे. अभव्योंको दर्शन नहीं मिलते।

श्रेणिक—हे भगवन्! शिखरजीकी यात्रा करनेका फल जो कुछ आपने कहा, सो तो यथार्थ है परन्तु उससे अधिक तथा सम्पूर्ण फल और क्या है, वह कृपा करके कहो।

गौतमस्वामी—हे राजन्! शिखरजीकी यात्रा करनेवाला फिर संसारमें अधिक नहीं भटकता. उनचास भव लेकर वह जीव पचासवें भवमें अवश्य ही सिद्धस्थानमें जाकर अजर अमर अखंड सदा जागती जोत होकर अचल रहता है, यह नियम है। इसके सिवाय यात्रा करनेवाला नरक तिर्यंच गतिमें तथा स्त्रीपर्यायमें भी जन्म नहीं लेता।

श्रेणिक—यदि ऐसा है, तो भगवन्! रावणने शिखरजीकी यात्रा की थी, फिर उसे नरकगति क्यों प्राप्त हुई?

गौतम०—रावण शिखरजीकी यात्रा करनेके लिये नहीं किन्तु त्रैलोक्यमंडल हाथीको पकड़नेके लिये मधुवन गया था, इसलिये वह यात्राके फलका भागी नहीं होसकता।

श्रेणिक—भगवन्! यदि कोई विना भावसे शिखरजी की यात्रा करै, तो उसकी नरक तिर्यंच गति छूटै कि नहीं।

गौतम०—राजन्! जिस प्रकारसे विना भावसे खाई हुई मिश्री मीठी लगती है, और दवाई रोगको शान्त करती है, उसी प्रकारसे विना भावसे की हुई यात्रा भी ऐसा नहीं है कि, फलवती न हो।

श्रेणिक—भगवन्! आपने कहा कि, भव्यको यात्रा होती है, परन्तु अभव्यको नहीं होती. सो यह बतलाइये कि, खास शिखरजीमें भीलादिक तथा पृथ्वी जल वनस्पति एकेन्द्रियादिक जीव राशि हैं, वे सब भव्य हैं अथवा अभव्य?

गौतम०—सम्मेदशिखरपर जितने जीवराशि हैं. वे सब भव्यराशि हैं।

श्रेणिक—भव्य किसे कहते हैं?

गौतम०—जिस जीवको जिनेन्द्रके वचनोंमें भ्रम उत्पन्न न हो, उसे भव्य कहते हैं।

इसप्रकार राजा श्रेणिक श्रीसम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्रका माहात्म्य सुनकर बहुत आनन्दित हुआ और अपनी रानी चेलना सहित यात्राके लिये चला परन्तु ज्यों ही पर्वतके निकट पहुंचा, त्यों ही वहांके निवासी दशलाख व्यन्तर देवोंने चारों ओर घोर अंधकार कर दिया। धूलवृष्टि, मेघगर्जन, पाषाणवृष्टि आदि अनेक प्रकारके औरभी विघ्न किये.तब रानी चेलणाने समझाया, नाथ! आपको यात्रा नहीं होवेगी क्योंकि जिस समय आपने दिगम्बरमुनिराजके गलेमें मराहुआ सर्प डाला था, उसी समय आपको नरक गतिका बंध पड़ चुका है। इसलिये इस पर्यायमें तीर्थराजके दर्शन होना

असंभव है.यह सुनकर राजा अपने कर्मोंकी गति जानकर अपने नगरको लौट गया।

दोहा।

सिद्ध क्षेत्र सुप्रसिद्ध है, जिन आगममें सार।
धर्मदास क्षुल्लक कहै, श्रीसमेदगिरि पार ॥ १ ॥
ताकी कथनी वारता, कह गये श्रीमुनिराज।
अब ताहीकी बचनिका, यह कीनी निज काज ॥ २ ॥

समाप्तोऽयं ग्रंथः।